कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ✓

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

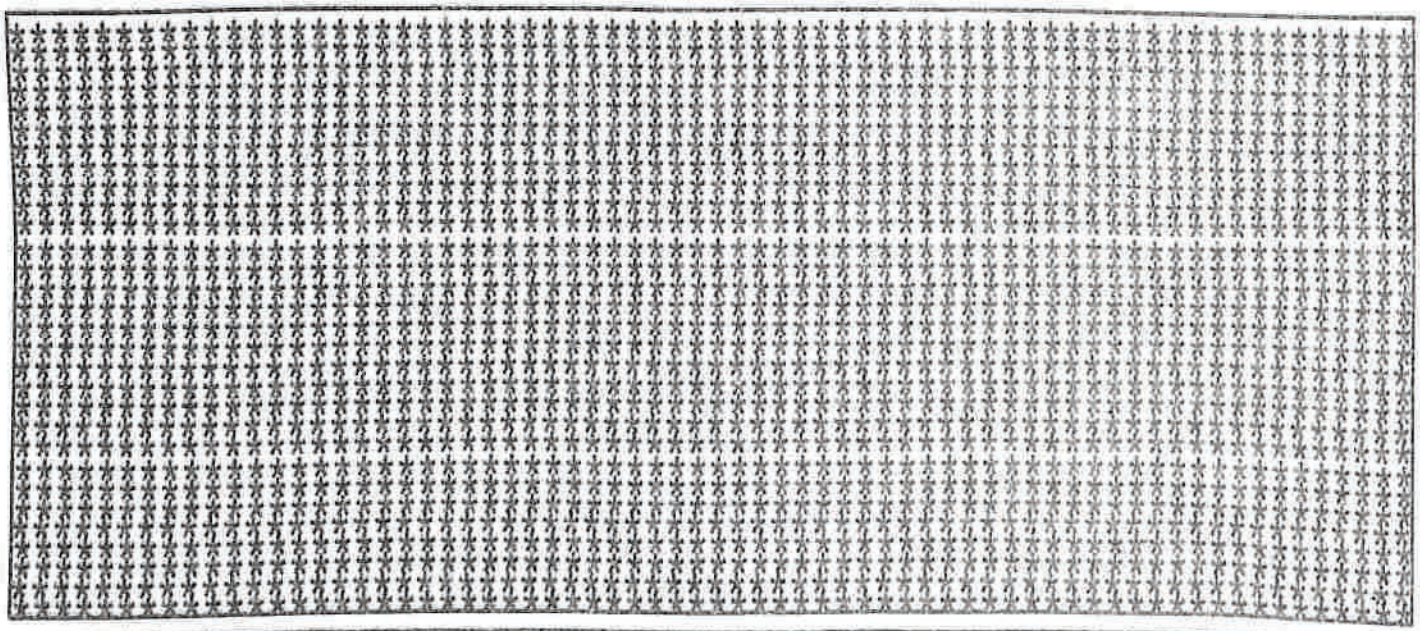

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1.

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी 'स्पन्दना' नाम की पाठ्यपुस्तक के पाठ 'आचार्योपदेश:' से लिया गया है। यह मूलत: व उपनिषदों से संकलित है। इसमें शिक्षा सम्पन्न होने पर आचार्य शिष्य को अपने जीवन में किस प्रकार आचरण करना चाहिए, वैसी शिक्षा। उपदेश दे रहा है।

अनुवाद :- माता देवी तुल्य है। पिता देव तुल्य है। आचार्य (शिक्षक) देवता समान है। अतिथि (मेहमान) भगवान है। हमें सदैव आनन्दनीय कर्म (कार्य) ही करने चाहिए। इसके विपरीत निन्दनीय कार्य नहीं करने चाहिए। सदैव ~~प्रश~~ प्रंश प्रंशसनीय कर्म ही करने चाहिए। हमेशा श्रद्धा से देना चाहिए। अश्रद्धा से नहीं देना चाहिए। भय से देना चाहिए। ह्रदय से देना चाहिए। यह ही आदेश है। यह उपदेश है। यह ही वेदो का उपदेश है। यह ही अनुशासन है। अत: इसकी पालना करनी चाहिए।

~~प्र~~

2. प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी 'स्पन्दना' पाठ्यपुस्तक के पाठ 'सुभाषित - रत्नानि' से लिया गया है। इसमें कपटी मित्र को त्यागने का आदेश दिया है।

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अनुवाद :- जो मित्र अनुपस्थिति में कार्य बिगाड़ने वाला होता है और उपस्थिति में मीठे वचन बोलता है। ऐसे मुखमुखी विष के घट घड़े के समान मित्र को त्याग ही देना चाहिए।

3. प्रसंग :- पद्यांशोऽयम् अस्माकं 'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'जय सुरभारति!' इति पाठात् उद्धृत। मूलतः गीतं डॉ॰ हरिराम आचार्य विरचितात 'मधुच्छन्दाः' ग्रन्थात सङ्कलितः। इदं गीतं कवि सुरभारत्याः गुणानां वर्णित :

व्याख्या :- हे देवि! सरस्वती तव आश्रय प्रदायिनी, त्रिलोके श्रेष्ठा, देवैः मुनिभिः वन्दितौ चरणौ यस्याः सा, या भृंगारादिभिः नव काव्यरसः माधुर्यमयी, कविता रूपेण अभिव्यञ्जता, मृदु हास्यता, सुन्दरं आभूषणेन युक्ता। हे देवि! तव रूपं चितार्कषक अस्ति।

व्याकरणिक बिन्दवः :-
त्रिभुवन = त्रिषु भुवनेषु (द्विगु समास)
सुरमुनि वन्दित चरणा = देवैः मुनिभिः वन्दितौ चरणौ यस्या सा (बहुव्रीहि समास)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. प्रसंग :- नाट्यांशोऽयम् अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य पाठं ~~पञ्च~~ 'जृम्भस्व सिंह ! दन्तान्स्तेगणयिष्ये' इति पाठात् उद्धृत: । मूलत: ~~३~~ नाट्यांश महाकवि कालिदास: विरचिता 'अभिज्ञान शाकुन्तलं ~~उद्~~ उद्धृत: । अस्मिन् वीर बालस्य तापसीभ्याम् सह वार्ता वर्णयन् -

व्याख्या :-

बाल: - हे सिंह शावक: ! स्वमुखं उद्घाटयति । अहं तव दन्तान् गणयिष्यामि ।

प्रथमा - हे अरे दुष्ट: किं त्वं अस्माकं सन्तति: इव पशूनां पीड़यत । ओह, तव क्रोधं तु वर्धयति । ~~निश्च~~ निश्चयैव मुनि: तव अभिधानं अ उचित कथयति - सर्वदमन: (सर्वेषां दमनं करोषि)

द्वितीया - वत्स ! यदि तव अयं शावकं न त्यजय (मोदय) तत निश्चय एव या सिंही तव आक्रष्यामि । (आक्रमण करिष्यामि)

बाल: - (~~स्त~~ स्मितम् सहित) अरे, अहं तु भयभीत: जायते । तत: ओष्ठं अवलोव

व्याकरणिक बिन्दव: :-

केसरिणी - केसर + इनि (स्त्रीलिङ्ग)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

5.

(i) उ० सर्वदमनस्य मणिबन्धे मा० ऐक्षाकरण्डकं आबद्धम आसीत ।

(ii) उ० कस्तूरी मृगात् जायते ।

(iii) उ० लोकहितं मम करणीयम् इति ग्रन्थस्य गीतस्य रचनाकारः 'डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकरः' आसीत।

(iv) उ० पञ्चतन्त्रस्य रचना विष्णु शर्मा: कृता ।

(v) उ० अस्माभिः अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि ।

(vi) उ० काव्येषु 'अभिज्ञान शाकुन्तलं' रम्यम् उच्यते ।

(vii) उ० 'संघेशक्तिः' हितोपदेशस्य मित्रभेदात् अङ्क सम्पादिता विद्यते ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(6) उ० ततस्तं ~~किम्~~ किम् भूत्वा दशति ?

(7) उ० भावन् किं वदति ?

(8) उ० कस्य सदा विजय एव भविष्यति ?

(9) उ० मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि ?

(10)

(i) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितं ।
मूढ़ैः पाषाण खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

(ii) उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिणं ।
वर्षं तद्भारत नामं भारती यत्र सन्तति: ॥

(11)

(क) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं अस्ति – परोपकार

(ख)
(1) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते ।

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(ii)	गाव: अनेभ्य अन्येभ्य: दुग्धं प्रयच्छ प्रयच्छन्ति ।
	(iii)	नदी स्वजलं न पिबति ।
	(iv)	स्वार्थं विद्यास अने अन्येभ्य: जीवनमेव वरम् विद्यते ।
	(v)	परेषाम् उपकार: परोपकार: उच्यते ।
	(ग)	
	(i)	कर्तृपदं अस्ति – वृक्षा: ।
	(ii)	सर्वनामपदं 'सर्वे' अस्ति ।
	(iii)	अत्र विशेषणपदं 'उपकारिणी' मातृसमा अस्ति ।
	(iv)	अत्र 'जीवनं' विशेष्य पदं अस्ति ।
	12.	
	(i)	महर्षि: = महा + ऋषि: (गुण सन्धि)
	(ii)	शिवोऽहम् = शिव: + अहम् (उत्व सन्धि)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13.

(i) गौ + अक: = गावक: (अयादि संधि)

(ii) शिवस् + च = शिवश्च (श्चुत्व संधि)

14.

(i) विशालं भवनं इति (कर्मधारय समास)

(ii) भरतश्च शत्रुघ्नश्च (द्वन्द्व समास)

(iii) प्रतिदिनं (अव्ययीभाव समास)

15.

(i) द्वितीया विभक्ति
'बिना' शब्दस्य योगे द्वितीय विभक्ति भवति।

(ii) चतुर्थी विभक्ति
'नमः' शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्ति भवति

(iii) द्वितीय विभक्ति
'उपर्युपरि' शब्दस्य योगे द्वितीय विभक्ति भवति

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	16. (i)	ध्वनी
	(ii)	शिक्षिका
	17. (i)	बुद्धि + मतुप
	(ii)	पार्वत + ङीप
	18.	
	(i)	श्वः
	(ii)	इतस्ततः
	(iii)	अधुनैव
	19. उ.	जनेन ग्रामः गम्यते ।
	20. उ.	भगिन्मी वस्त्रं प्रक्षाल्यति ।
	21. उ.	अहं नगरं गच्छामि ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	22.	
	(क)	सपाद दश वादने
	(ख)	पादोन दश वादने
	23. (i)	कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रति गच्छति ।
	(ii)	दृष्टेः तिस्रः महिलाः वस्तूनिः क्रीणन्ति ।
	(iii)	अहं च रोटिकाम् खादामि ।
	24.	सेवायाम्, श्रीमन्तः प्रधानाचार्य महोदयः, राजकीय माध्यमिक विद्यालयः, सुचन्दर नगरं । विषय :- अस्वास्थ्यस्य कारणेन अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रं । महोदयः, उपर्युक्तविषयान्तरे निवेदनं अस्ति यत अहं गत दिवसात अस्वस्थं अस्मि । अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुं न शक्नोमि ।

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अतः निवेदनं अस्ति यत् मह्यम् 16-03-19 दिनाङ्कतः 18-03-19 दिनाङ्कपर्यन्तं अवकाशं प्रदाय अनुग्रहीष्यन्ति भवन्तः ।

सधन्यवादम् ।

भवदीयः आज्ञापालकः
नरेन्द्रः
कक्षा - 10

दिनाङ्कः - 16-03-19

Q5.

महेशः - निरञ्जन ! श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते ?

निरञ्जनः - अरे ! त्वं न जानासि ? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति ।

महेशः - अहो ! उत्तमः विचारः । सर्वैः श्वः कक्षा गम्यते ?

निरञ्जनः - प्रातः अष्ट अष्टवादनात् वामनः कार्यमिदं भविष्यति ।

महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य स्वच्छतां करिष्यति

निरञ्जनः - आरभ्य विद्यामानस्य अधस्य उद्यानस्य आर्यौ करिष्यामः ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

महेश: - तेन तद् रम्णीयं सुन्दरं च भविष्यति।

निरञ्जन: - नालीनां स्वच्छता योजनायां स्वीकृता स्व

26.

(i) महिला कूपात् जलं नयति ।

(ii) त्वं अपि गच्छ ।

(iii) दश अवद अवादनम

(iv) अहं गणितं विज्ञानं च पठामि ।

(v) मित्राय युष्मं रोचते ।

(vi) अहं ज्ञानी अस्मि ।

27.

(i) पर्वतस्य पृष्टत: ग्राम: अस्ति ।

(ii) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति ।

(iii) मध्ये च भगवत: शिवस्य शिवस्य देवालयोऽस्ति

(iv) पर्वतं निकषा एका नदी प्रवहति ।

(v) ग्राम जना: नद्यां तरन्ति ।

(vi) ग्रामस्य विद्यालय: अतीव: मनोहर: अस्ति ।

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र8.	

क्रमसंयोजनं :-

(i) एकदा एकः मकरः नद्यां वसति स्म।

(ii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत्।

(iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म।

(iv) मकरः वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्।

(v) फलानि अतिमधुराणि। अतः वानरः हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानरं हृदयं खादामि।

(vi) वानरः मकरस्य प्रगाढां बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान्।

॥ समाप्त ॥